कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

DOWNLOAD MISSION GYAN APP
कक्षा 10
eकक्षा By Mission Gyan
YouTube
भारत और समकालीन विश्व - 2
अध्याय–4
औद्योगीकरण का युग
आदि-औद्योगीकरण
NCERT
RBSE
Jinender Soni
Founder - Mission Gyan

औद्योगीकरण का युग



डॉन ऑफ द सेंचुरी, ई.टी. पॉल म्युजिक कंपनी, न्यूयार्क (अमेरिका) एवं इंग्लेंड –सन् 1900

- ई.टी. पॉल म्यूज़िक कंपनी ने सन् 1900 में संगीत की एक किताब प्रकाशित की थी।
- इस किताब की जिल्द पर दी गई तसवीर में DAWN OF THE CENTURY (नई सदी के उदय) का ऐलान किया गया था।
- इस चित्र के मध्य में एक देवी जैसी तसवीर है।
- यह देवी हाथ में नयी शताब्दी की ध्वजा लिए हुए है।
- इस ध्वजा प्रगति की ध्वजा है। इसलिए वह प्रगति का फरिश्ता दिखाई देती है।
- उसका एक पाँव पंखों वाले पहिये पर टिका हुआ है। यह पहिया समय का प्रतीक है। उसकी उड़ान भविष्य की ओर है।
- उसके पीछे उन्नति के चिह्न तैर रहे हैं : रेलवे, कैमरा, मशीनें, प्रिंटिंग प्रेस और कारख़ाना।
- मशीन और तकनीक का यह महिमामंडन एक अन्य तसवीर में और भी ज़्यादा साफ दिखाई देता है।
- यह तसवीर एक व्यापारिक पत्रिका के पन्नों पर सौ साल से भी पहले छपी थी।



दो जादूगर, इनलैंड प्रिंटर्स में प्रकाशित, 26 जनवरी 1901

- इस तसवीर में दो जादूगर दिखाए गए हैं।
- ऊपर वाले हिस्से में प्राच्य (Orient) इलाके का अलादीन है जिसने अपने जादुई चिराग को रगड़ कर एक भव्य महल का निर्माण कर दिया है।

प्राच्य : भूमध्य सागर के पूर्व में स्थित देश।
- आमतौर पर यह शब्द एशिया के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

❖ पश्चिमी नज़रिये में प्राच्य इलाके पूर्व-आधुनिक, पारंपरिक और रहस्यमय थे।

- नीचे एक आधुनिक मेकैनिक है।
- यह मेकैनिक अपने आधुनिक औज़ारों से एक नया जादू रच रहा है।
- वह पुल, पानी के जहाज़, मीनार और गगनचुंबी इमारतें बनाता है।
- अलादीन पूरब और अतीत का प्रतीक है; मेकैनिक पश्चिम और आधुनिकता का प्रतीक है।
- ये तस्वीरें आधुनिक विश्व की विजयगाथा कहती हैं।
- इस गाथा में आधुनिक विश्व को
  - द्रुत तकनीकी बदलावों व आविष्कारों,
  - मशीनों व कारखानों,
  - रेलवे और वाष्पपोतों

  की दुनिया के रूप में दर्शाया गया है।
- इन तसवीरों के द्वारा औद्योगीकरण का इतिहास विकास की कहानी के रूप में सामने आता है।
- इनमें आधुनिक युग तकनीकी प्रगति के भव्य युग के रूप में उभरता है।
- अब ये छवियाँ और ये संबंध लोकमानस का हिस्सा बन चुके हैं।
- तेज़ औद्योगीकरण, प्रगति व आधुनिकता का स्वरूप है।
- रेलवे और फ़ैक्ट्रियों का निर्माण,
  गगनचुंबी इमारतों व पुलों का विस्तार
  समाज के विकास का द्योतक होता है।
- औद्योगीकरण के इतिहास को जानना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि निम्न प्रश्नों के हल जानना आवश्यक है :-

1. क्या औद्योगीकरण के लिए तीव्र तकनीकी विकास हमेशा जरूरी होता है?
2. क्या प्रत्येक काम के लिए दिनोंदिन बढ़ते मशीनीकरण का गुणगान सही है?
3. औद्योगीकरण से लोगों की ज़िंदगी पर क्या असर पड़ा है?

- इसके लिए हमें औद्योगीकरण का इतिहास पढ़ेंगे जिसमें हम दुनिया के पहले औद्योगिक राष्ट्र-ब्रिटेन और उसके बाद भारत में औद्योगीकरण का अध्ययन करेंगे।
- यद्यपि भारत में तो औद्योगिक बदलाव, औपनिवेशिक शासन के द्वारा ही किये जा रहे थे।

औद्योगिक क्रांति से पहले

- औद्योगीकरण को अकसर हम कारखानों के विकास के साथ ही जोड़कर देखते हैं।
- औद्योगिक उत्पादन से हमारा आशय फैक्ट्रियों में होने वाले उत्पादन से होता है।
- औद्योगिक मज़दूरों की बात करें तो हमारा आशय कारखानों में काम करने वाले मज़दूरों से ही होता है।
- औद्योगीकरण के इतिहास अकसर प्रारंभिक फैक्ट्रियों की स्थापना से शुरू होते हैं।

आदि-औद्योगीकर्रण

- इंग्लैंड और यूरोप में फैक्ट्रियों की स्थापना से भी पहले ही अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार के लिए बड़े पैमाने पर

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

औद्योगिक उत्पादन होने लगा था।

- यह उत्पादन फैक्ट्रियों में नहीं होता था।
- इतिहासकार औद्योगीकरण के इस चरण को आदि-औद्योगीकरण कहते हैं।

आदि :- किसी चीज की पहले या प्रारम्भिक अवस्था का संकेत

आदि-औद्योगीकरण की शुरूआत

- 17वीं तथा 18वीं शताब्दी में यूरोपीय शहरों के सौदागर गाँवों की तरफ रुख करने लगे थे।
- वे किसानों और कारीगरों को पैसे देकर उनसे अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार के लिए उत्पादन करवाते थे।
- उस समय विश्व व्यापार के विस्तार और दुनिया के विभिन्न भागों में उपनिवेशों की स्थापना के कारण चीज़ों की माँग बढ़ने लगी थी।
- इस माँग को पूरा करने के लिए केवल शहरों में रहते हुए उत्पादन नहीं बढ़ाया जा सकता था।
- एक वजह तो यह थी कि शहरों में शहरी दस्तकारी और व्यापारिक गिल्ड्स काफी ताकतवर थे।

गिल्ड्स :- समान व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों का संगठन।

- ये गिल्ड्स उत्पादकों के संगठन होते थे।
- गिल्ड्स से जुड़े उत्पादक

1. कारीगरों को प्रशिक्षण देते थे।
2. इन कारीगरों पर नियंत्रण रखते थे।
3. प्रतिस्पर्धा और मूल्य तय करते थे।
4. व्यवसाय में नए लोगों को आने से रोकते थे।

- शासकों ने भी विभिन्न गिल्ड्स को खास उत्पादों के उत्पादन और व्यापार का एकाधिकार दिया हुआ था।
- फलस्वरूप, नए व्यापारी शहरों में कारोबार नहीं कर सकते थे। इसलिए वे गाँवों की तरफ जाने लगे।

आदि-औद्योगीकरण की प्रक्रिया :-

- गाँवों में गरीब काश्तकार और दस्तकार सौदागरों के लिए काम करने लगे।
- यह वह समय था जब खुले खेत खत्म होते जा रहे थे।
- छोटे और गरीब किसान अपनी रोज़ी-रोटी के लिए साझा ज़मीनों से जलाने की लकड़ी, सब्ज़ियाँ, भूसा और चारा आदि बीन कर काम चला रहे थे।
- ये आमदनी के नये स्त्रोत ढूंढ रहे थे।
- बहुतों के पास खेत तो थे पर उनसे घर के सारे लोगों का पेट नहीं भर पा रहा था।
- इस स्थिति में जब सौदागर वहाँ आए और उन्होंने माल पैदा करने के लिए पेशगी रकम दी तो किसान फौरन तैयार हो गए।
- सौदागरों के लिए काम करते हुए वे गाँव में रहते हुए अपने छोटे-छोटे खेतों को भी सँभाल सकते थे।
- इस आमदनी ने उनको बड़ा सहारा दिया।
- अब उन्हें पूरे परिवार के श्रम संसाधनों के इस्तेमाल का मौका भी मिल गया।

Download Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

18वीं सदी में कताई



- परिवार के सभी सदस्य धागा बनाने के काम में लगे हैं।
- एक चरखे पर केवल एक ही तकली बन रही है।
- इस व्यवस्था से शहरों और गाँवों के बीच एक घनिष्ठ संबंध विकसित हुआ।
- सौदागर रहते तो शहरों में थे लेकिन उनके लिए काम ज़्यादातर देहात में चलता था।
- इंग्लैंड के कपड़ा व्यवसायी स्टेप्लर्स (Staplers) से ऊन खरीदते थे ।
- उसे फिर सूत कातने वालों के पास पहुँचा देते थे। जिससे धागा बनता था।
- इससे मिलने वाले धागे को बुनकरों, फुलर्ज़ (Fullers), और रंगसाज़ों के पास ले जाया जाता था।
- लंदन में कपड़ों की फिनिशिंग होती थी।

इसलिए लंदन को फिनिशिंग सेंटर के रूप में जाना जाने लगा।

स्टेपलर :- वह व्यक्ति जो ऊन को छाँटता है।

फुलर :- वह व्यक्ति जो चुन्नटों के सहारे कपड़े को समेटता है।

- इसके बाद निर्यातक व्यापारी कपड़े को अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में बेच देते थे।
- अत: इस आदि-औद्योगीकरण में व्यवसायिक आदान-प्रदान होता रहता था।
- इस पर सौदागरों का नियंत्रण था और चीज़ों का उत्पादन कारखानों की बजाय घरों में होता था।
- उत्पादन के प्रत्येक चरण में प्रत्येक सौदागर 20-25 मज़दूरों से काम करवाता था।
- इसका मतलब यह था कि कपड़ों के हर सौदागर के पास सैकड़ों मज़दूर काम करते थे।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here